स्वामी प्रणवानंदजी

स्वामी प्रणवानंदजी का पूर्वाश्रम का नाम बंकिमबाबू था। उनका जन्म कलकत्ता के बंगाली परिवार में हुआ था। बंकिमबाबू धनवान परिवार से थे। उन्हों ने अर्थशास्त्र के साथ स्नातक के अभ्यास के बाद पिता के व्यापार को संभाला। पच्चीस वर्ष की आयु में आशादेवी के साथ उनका ब्याह हुआ। बयालीस की उम्र तक जब संतान प्राप्ति नहीं हुई तब वह हताश हो कर बाबा केदारनाथ की यात्रा के लिए निकले। रास्ते में स्वास्थ्य की गरबडी के कारण हिमालय के जंगलो में बंकिमबाबू निस्तेज हो कर गीर पड़े। तब एक युवान संन्यासी (भगवान लकुलीश जी) ने आकर उन्हें पुन: जीवन दान दिया और भविष्य में पुन: मिल कर सेवा अवसर प्रदान करने की बात कहकर अंतरध्यान हो गए। इस बात के तकरीबन तीन महिने बीत जाने के पश्चात् वह संन्यासी अचानक सुबह इनकी कोठी पर आए और उन्हें अपनी असाधारण योग शक्ति का कुछ अनुभव करवाया। फिर पति पत्नी दोनों को मंत्रदीक्षा देकर समझाया कि मोक्ष प्राप्ति के लिए कठीन योग साधना करना जरुरी है। बंकीमबाबू ने मोक्षसाधना करने की ईच्छा व्यक्त की। वह संन्यासी कि जिनको वह दंपति अब गुरु भगवान कहते थे, उन्होंने कहा कि तेरे संन्यासी बनने के बाद तुझे मिलुँगा। फिर वह अदृश्य हो गए।

कुछ महीने बाद बंकिम बाबूने गृहत्याग कर, हरिद्वार में स्वामी प्रकाशानंदजी से संन्यस्त दीक्षा ग्रहण कर संन्यासी नाम स्वामी प्रणवानंदजी धारण किया। संन्यस्त के पश्चात् करीब एक वर्ष तक भारत में भ्रमण कर मुख्य तीर्थो की यात्रा की। एक दिन हरिद्वार के गंगातट पर स्थित एक शिवालय में प्रणवानंदजी अकेले बैठे थे तब अचानक गुरु भगवान प्रकट हुए तथा आपको योग दीक्षा दी और एकांत स्थान में रहते हुए योग साधना करने का आदेश देकर अदृश्य हो गए। तत् पश्चात् वह ऋषिकेश में ही कुटीया में रहकर योगसाधना करने लगे। वहाँ पर आपने लगातार सत्रह वर्ष तक साधना की। उसके फलस्वरुप आपने शारीरिक बंधनो (शरीर धर्म जैसे की भूख, प्यास, थकान, निद्रा, सर्दी, गरमी इत्यादी का प्रभाव) से छुटकारा प्राप्त कर लिया था।

संवत् 1986, योगिनी एकादशी ई.सन् 1930 की मध्यरात्रि को उनकी मृत्यु हुई यानि प्रणवानंदजी नामक पार्थिव देह से जिवात्मा निकल गई और उसके बाद उनको पुन: मानव जन्म प्राप्त हुआ और पूर्व जन्म के योग साधना के प्रभाव और गुरु भगवान की कृपा से पुन: योग साधना करने लगे।